5 धरती की शान

– पंडित भरत व्यास जी

पंडित भरत व्यास जी हमारे जाने माने गीतकार थे। आपका जन्म १८ दिसम्बर, १९१८ में राजस्थान के चुरु गाँव में हुआ था। आपने कई गीतों की रचना की है। यह गीत सन् १९५८ में आई हिन्दी फिल्म 'गाँव गौरी' से लिया गया है।

इस गीत में कवि ने मनुष्य को सबसे बुद्धिमान बताया है। मनुष्य ने अपनी बुद्धि और कठोर परिश्रम के आधार पर जल, स्थल और आकाश में कई उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। मनुष्य प्रकृति को बहुत सीमा तक अपने अनुकूल ढालने में सफल हुआ है। मनुष्य के लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है। मनुष्य जो चाहे वह कर सकता है, यही भाव काव्य में अंतर्निहित है और यही बात मनुष्य की महानता का प्रमाण है।

धरती की शान तू भारत की संतान,
तेरी मुट्ठियों में बंद तूफान है रे,
मनुष्य तू बड़ा महान है॥

तू जो चाहे पर्वत पहाड़ों को फोड़ दे,
तू जो चाहे नदियों के मुख को भी मोड़ दे,
तू जो चाहे माटी से अमृत निचोड़ दे,
तू जो चाहे धरती को अम्बर से जोड़ दे,
अमर तेरे प्राण, मिला तुझको वरदान
तेरी आत्मा में स्वयं भगवान है रे ॥ 1 ॥

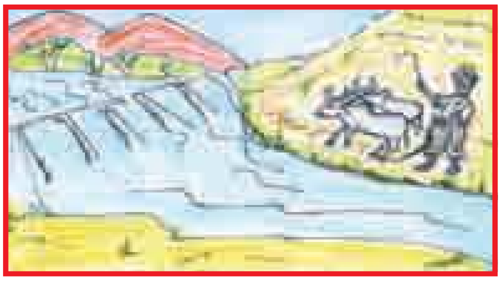

नयनों में ज्वाल, तेरी गति में भूचाल,
तेरी छाती में छिपा महाकाल है,
पृथ्वी के लाल तेरा हिमगिरि सा भाल,
तेरी भृकुटी में तांडव का ताल है,
निज को तू जान, जरा शक्ति पहचान
तेरी वाणी में युग का आह्वान है रे ॥ 2 ॥

धरती सा धीर, तू है अग्नि सा वीर,
तू जो चाहे तो काल को भी थाम ले,
पापों का प्रलय रुके, पशुता का शीश झुके,
तू जो अगर हिम्मत से काम ले,
गुरु सा मतिमान, पवन सा तू गतिमान,
तेरी नभ से भी ऊँची उड़ान है रे ॥ 3 ॥

शब्दार्थ

शान वैभव, गौरव **मुख** प्रवाह, वहेण (गुज.) **धरती** पृथ्वी, धरा **अम्बर** आकाश, नभ **ज्वाल** अग्नि **भूचाल** भूकंप **भाल** ललाट, कपाल **भृकुटी** भौंह, **काल** समय **मतिमान** बुद्धिमान

अभ्यास

प्रश्न 1. काव्य को डी.वी.डी., मोबाइल जैसे साधनों के माध्यम से सुनाकर उसका व्यक्तिगत और सामूहिक गान करवाना।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) आप क्या-क्या कर सकते हैं?

(2) विविध क्षेत्रों में मनुष्य ने क्या-क्या प्रगति की है?

(3) अन्य जीवों से मनुष्य महान कैसे है?

(4) काव्य में उल्लिखित प्रकृति के तत्त्व बताइए और उनके समानार्थी शब्द दीजिए।

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और शब्दकोश में से उनके अर्थ ढूँढ़कर बताइए :

(1) हृष्टपुष्ट	(2) संवाद	(3) शीघ्र	(4) जौहर	(5) अजनबी
(6) वेदांत	(7) मुक़द्दर	(8) शागिर्द	(9) वृत्ति	(10) स्पष्ट

प्रश्न 4. निम्नलिखित काव्यपंक्तियों का भावार्थ बताइए :

(1) पृथ्वी के लाल तेरा हिमगिरि सा भाल
तेरी भृकुटी में तांडव का ताल है।

(2) गुरु सा मतिमान, पवन सा तू गतिमान
तेरी नभ से भी ऊँची उड़ान है रे।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) मनुष्य क्या-क्या कर सकता है?

(2) मनुष्य युग का आह्वान कैसे कर सकता है?

(3) मनुष्य यदि हिम्मत से काम ले तो क्या हो सकता है?

प्रश्न 2. उचित जोड़ मिलाइए :

अ	ब
(1) मनुष्य की आत्मा में	(1) युग का आह्वान है।
(2) मनुष्य के नयनों में	(2) महाकाल है।
(3) मनुष्य की भृकुटी में	(3) स्वयं भगवान है।
(4) मनुष्य की वाणी में	(4) भूचाल है।
(5) मनुष्य की छाती में	(5) ज्वाल है।
	(6) तांडव का ताल है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प के सामने ✓ कीजिए :

(1) मनुष्य चाहे तो काल को....

☐ थाम ले। ☐ रोक ले। ☐ जान ले।

(2) मनुष्य चाहे तो धरती को....

☐ फोड़ दे। ☐ युग का आह्वान दे। ☐ अम्बर से जोड़ दे।

(3) मनुष्य चाहे तो माटी से....

☐ मुख को भी मोड़ दे। ☐ अमृत निचोड़ दे। ☐ दुनिया बदल दे।

प्रश्न 4. नीचे दिए गए शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

जैसे कि : धरती × आकाश

वाक्य : पक्षी आकाश में उड़ रहे हैं।

(1) अमृत :

(2) वरदान :

(3) ऊँचा :

(4) पाप :

(5) जीवन :

प्रश्न 5. नीचे दिए गए शब्दों को शब्दकोश के क्रम में रखकर उनका अर्थ शब्दकोश में से जानिए और लिखिए :

तूफ़ान, वरदान, नयन, शीश, क्षति, आईना, झंकार

योग्यता विस्तार

- **निम्नलिखित कविता का गान करवाइए :**

नदियाँ न पीए कभी अपना जल
वृक्ष न खाए कभी अपना फल
अपने तन से, मन से, धन से
देश को दे दे दान रे! (2)
वो सच्चा इन्सान रे!! (2)

चाहे मिले सोना-चाँदी
चाहे मिले रोटी बासी
महल मिले बहु सुखकारी
चाहे मिले कुटिया खाली
प्रेम और संतोष भाव से
करता जो स्वीकार रे! (2)
वो सच्चा इन्सान रे!! (2)

चाहे करे निंदा कोई
चाहे कोई गुणगान करे
फूलों से सत्कार करे
काँटों की चिंता न करे
मान और अपमान दोनों
जिसके लिए समान रे! (2)
वो सच्चा इन्सान रे!! (2)

- **'तेरी नभ से भी ऊँची उडान है' के संदर्भ में निम्नलिखित पंक्तियाँ पढ़कर सोचिए:**

(1) आजमाना चाहते हो मेरी उड़ान को,
तो ऊँचा कर लो अपने आसमान को।

(2) तू थक के न बैठ कि तेरी उड़ान अभी बाकी है,
जमीं खत्म हुई तो क्या, आसमान अभी बाकी है।